ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स नो वसून्याभर।। अथर्ववेद 6/63/4
हे परमेश्वर हमें धन-धान्य प्राप्त करावें।
O Lord ! Bestow upon us wealth & Prospevity.

वर्ष 37, अंक 23 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 12 मई, 2014 से रविवार 18 मई, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

8-9वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन

15 जून, 2014 : आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.) | **20 जुलाई, 2014 : आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा आयोजित आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के 8 वें एवं 9वें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। **8वां सम्मेलन रविवार, 15 जून 2014 को प्रात: 10 बजे आर्य समाज मल्हार गंज इन्दौर (म.प्र)** में तथा **9वां सम्मेलन 20 जुलाई, 2014 को आर्यसमाज कीर्ति नगर नई दिल्ली** मे आयोजित किया जाएगा। जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www. thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1'** के पते पर भेज दें।

जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र **(इन्दौर हेतु) 1 जून, 2014** तथा **दिल्ली हेतु 5 जुलाई, 2014** तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। **सम्मेलन के आयोजन के दिन भी दोनों स्थानों पर तत्काल पंजीकरण की सुविधा उपलब्ध होगी।** तत्काल पंजीकरण कराने वाले आर्य युवक-युवतियों के नाम सप्लीमैंट्री पुस्तिका में प्रकाशित किए जाएंगे। जोकि सभी प्रतिभागियों को 15 अगस्त, 2014 तक भेजी जाएगी।

निवेदक : श्री अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)

सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली क अन्तर्गत अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

33वां वैचारिक क्रान्ति शिविर : 18 मई से 31 मई, 2014

स्थान : आर्य समाज मेन बाजार, रानी बाग, दिल्ली -110034

उद्घाटन समारोह	यज्ञोपवीत एवं संकल्प	समापन समारोह	अध्यक्षता
18 मई सायं 6 बजे	25 मई प्रात: 8 बजे	31 मई सायं 6 बजे	महाशय धर्मपाल जी

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

निवेदक : माता प्रेमलता शास्त्री, महामन्त्री | राजीव आर्य, कोषाध्यक्ष | जोगेन्द्र खट्टर, प्रधान आर्यसमाज

आर्य वीर/वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

आर्यवीरों हेतु

25 मई, 2014 से 1 जून, 2014 तक
स्थान : डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सै. -7, रोहिणी, दिल्ली-85

उद्घाटन समारोह	समापन समारोह
25 मई सायं 4 बजे	1 जून सायं: 4 बजे

आर्यवीरांगनाओं हेतु

18 मई से 25 मई, 2014
स्थान : दयानन्द मॉडल स्कूल, विवेक विहार, दिल्ली-95

उद्घाटन समारोह	समापन समारोह
18 मई सायं 6 बजे	25 मई प्रात: 10 बजे

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने बालक/ बालिकाओं को व आर्य वीर/वीरांगना दल शाखा के प्रत्येक आर्यवीर एवं वीरांगना को शिविर मे भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

आर्यजन अपने बच्चों को प्रशिक्षण शिविर में अवश्य ही भेजें तथा उद्घाटन व समापन समारोहों के अवसर पर अधिकाधिक संख्या में पधारकर आर्यसमाज की युवा पीढ़ी को अपना आशीर्वाद प्रदान करके उत्साहवर्धन करें।

निवेदक

ब्र. राजसिंह	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	जगवीर आर्य	बृहस्पति आर्य	आ. सुनीति आर्या	लिपिका आर्या
प्रधान	व. उप प्रधान	महामन्त्री	संचालक	महामन्त्री	संचालिका	मन्त्राणी
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा			आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश		आर्य वीरांगना दल दिल्ली	

वेद-स्वाध्याय

प्राणायाम से रोगनाश

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

दद्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः। दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः। ऋग्वेद 10/137/2

अर्थ—(**इमौ**) ये (**द्वौ**) दोनों [श्वास-प्रश्वास] (**वातौ**) वायु (**वातः**) आ-जा रहे हैं। उनमें से एक, श्वास (**आ सिन्धोः**) प्राणाशय, हृदय तक जाता है और दूसरा, प्रश्वास (**परावत**) बाहर दूर तक जाता है। हे रोगिन्! (**ते**) तेरे लिये (**अन्यः**) एक श्वासरूप वायु (**दक्षम्**) बल को लाता है और (अन्यः) दूसरा प्रश्वास रूप (**यत् रपः**) पाप रोग, दुःख को परे दूर ले जाता है।

पृथिवी और समुद्र के मध्य वायु का आदान-प्रदान होता रहता है। प्रतिदिन दिन में जल से स्थल की ओर शीतल वायु समुद्र के निकटस्थ स्थलों में प्रवाहित होती है क्योंकि पृथिवी उष्ण और समुद्र शीतल बना रहता है। इसी भाँति रात्रि में स्थल से जल की ओर वायु बहने लगता है। इसी प्रकार वर्षा ऋतु में समुद्र से स्थल की ओर मानसून चलने लगता है और प्रचुर मात्रा में वर्षा कर अन्न का उत्पादन और प्राणी मात्र का सन्ताप हरता है। मेंढकों का टर्र टर्र, कोयल की कुहू ध्वनि सबका मन हर्षित कर देती है। मयूरों का मन मयूर नाचने लगता है। वर्षा ऋतु के पश्चात् मानसून लौटने लगता है और वर्षाजन्य रोग-मन्दाग्नि, विषम ज्वर, पित्त प्रकोप, वायु के विकार भी शान्त होते चले जाते हैं।

'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' हमारे शरीर में भी **द्वाविमौ वातौ वात** दो वायु [श्वास-प्रश्वास] आ जा रहे हैं। जो वायु बाहर से फुफ्फुसों के भीतर प्रविष्ट हो रहा है उसे श्वास कहते हैं। यह प्राणप्रद वायु है जिसमें उपस्थित आक्सीजन फुफ्फुस प्रकोष्ठों में पहुँच रक्त में मिल जाती है और उतनी ही कार्बन डाय आक्साइड रक्त से फेफड़ों में होती हुई प्रश्वास द्वारा बाहर फेंक दी जाती है। फेंफड़ों से छोड़ी गयी अशुद्ध वायु को प्रश्वास कहते हैं जो भीतर की बहुत सी अशुद्धियाँ बाहर निकाल रक्त को शुद्ध कर देता है। जब शुद्ध रक्त शरीर के विभिन्न तन्त्रों को प्राप्त होता है तो उनकी कार्यशक्ति बढ़ जाती है। इस प्रकार यह श्वास-प्रश्वास का क्रम आजीवन चलता ही रहता है। ये दोनों **आसिन्धोरा परावतः** एक श्वास हृदय-सिन्धु तक जाता है और दूसरा बाहर नासिका से सोलह अंगुल दूर तक पहुँचता है। बाहर से लिया गया श्वास **दक्षं ते अन्य आ वातु** हे रोगी! तेरे लिये बल और प्राणशक्ति को लेकर आ रहा है और दूसरा प्रश्वास **परान्यो वातु यद्रपः** जो तेरे शरीर में रोग तथा दूसरे विकार हैं उन्हें बाहर बहाकर ले जाये।

श्वास-प्रश्वास की इस क्रिया को यदि तालबद्ध रीति से किया जाता है तो इसे प्राणायाम कहते हैं जिसकी महिमा वेद, उपनिषद्, योगदर्शन और हठ योग के ग्रन्थों में अनेक बार गाई गई है। प्राणशक्ति का आयाम, नियन्त्रण प्राणायाम कहा जाता है। यह शक्ति हमें अन्न, जल, श्वास, सूर्य की किरणों द्वारा प्राप्त होती है। ये सारे प्राणशक्ति के माध्यम है परन्तु इसमें वायु के आक्सीजन की मात्रा अधिक रहने से मन्त्र इसी के महत्त्व को बतला रहा है जिसे किसी योग्य शिक्षक द्वारा सीख कर नियमित अभ्यास करना चाहिये। प्रातःकाल आधा घण्टा दीर्घ श्वसन, अनुलोम-विलोम, कपालभाति का अभ्यास करने से फुफ्फुस प्रकोष्ठ लचीले बन जाते हैं और वे दिन भर दीर्घ श्वसन करते रहते हैं। सामान्य श्वास फेफड़ों के एक तिहाई भाग तक ही जाता है। शेष दो तिहाई भाग श्वसन क्रिया से वञ्चित ही रहता है। जिस अङ्ग से कार्य नहीं लिया जाये उसकी कार्यशक्ति क्षीण हो जाती है। यक्ष्मा टी०बी० फेफड़ों का ही रोग है जिसे उचित विधि से श्वास-प्रश्वास और प्राणायाम द्वारा नियन्त्रित किया जा सकता है परन्तु रोग की जीर्णावस्था में प्रथम अन्य उपायों से चिकित्सा कर पुनः मार्गदर्शक की उपस्थिति में प्राणायाम का अभ्यास करना उचित है। इसी भाँति श्वास रोग एवं नजला, जुकाम, उच्च रक्तचाप दीर्घ-श्वसन एवं अनुलोम-विलोम श्वसन क्रिया से ठीक होते हैं। इसके अतिरिक्त हठयोग के ग्रन्थों में विविध प्राणायाम अनेक रोगों में लाभकारी हैं, यह बतलाया है। इनकी विधि योग्य शिक्षक से ही सीखनी चाहिये अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि की सम्भावना अधिक रहती है।

रोग निवर्तक प्राणायाम

इन प्राणायामों का अभ्यास करते समय प्रभावित अंग पर ध्यान को केन्द्रित करना और प्राणशक्ति को संकल्प बल से वहाँ ले जाकर यह चिन्तन करना चाहिये कि प्राण-शक्ति वहाँ पहुँच कर उस अंग को आरोग्य प्रदान कर रही है और प्रश्वास के साथ उस रोग को बाहर निकाल फेंक रही है—

१. नाभि तक श्वास को भरकर उसे नाभि में धारण करने से उदर के विकार दूर होते हैं।

२. एक मास तक प्रातः, मध्याह्न और सायं शीतली प्राणायाम के अभ्यास से वात, पित्त के विकार और दाह शान्त होते हैं।

३. सिद्धासन में बैठकर श्वास लेते समय यह चिन्तन न करें कि श्वास नाक के स्थान पर मूत्रेन्द्रिय के छिद्र द्वारा शरीर में प्रविष्ट हो रहा है। इस विधि से आकर्षित कर उसे मूलाधार में ही रोके रखें। साथ ही मूलबन्ध भी लगायें। इस अभ्यास से प्राणाग्नि कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत कर सुषुम्णा में प्रविष्ट होती है। शीघ्रपतन, अर्श और भगन्दर का निवारण होता है। (जाबाल उपनिषद् अ० ६)

प्राणशक्ति का सारे शरीर में संचार करना

खुले वातावरण में कम से कम वस्त्र शरीर पर रखकर शवासन में शरीर को ढीला छोड़ दीजिये।

श्वास को धीरे-धीरे भीतर भरें और यह चिन्तन करें कि श्वास शरीर के एक-एक अंग तक पहुँच रहा है और उसके साथ प्राणशक्ति भी वहाँ जा रही है।

श्वास भरने के पश्चात् कुछ समय उसे भीतर ही रोक लीजिये।

रेचक करते समय चिन्तन करें कि प्रश्वास के साथ शरीर के समस्त रोग, दुर्गुण, दुर्व्यसन, दुर्विचार बाहर निकल रहे हैं मेरा शरीर तथा मन स्वस्थ एवं प्रसन्न हो रहा है।

इस विधि का प्रतिदिन अभ्यास करने से शरीर में स्फूर्ति, लावण्य और हलकापन आकर मन भी शान्त होता है। - ***क्रमशः***

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के तत्त्वावधान में
आर्य वीर दल राष्ट्रीय शिविर

स्थान : गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

दिनांक : 1 जून से 15 जून 2014 तक

प्रो. राजेन्द्र विद्यालंकार महामन्त्री (09215226571)

स्वामी (डॉ.) देवव्रत सरस्वती प्रधान संचालक (09868620631)

सत्यार्थ प्रकाश का उजियारा

सर्व वसुधं कुटुम्ब कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नारा हमारा,
देव दयानन्द प्रतिपादित सत्यार्थ प्रकाश से होगा उजियारा।

समुल्लास रचाये चौदह, दिया परिपूर्ण ज्ञान भंडार,
वेदों का सार गूढ़ रहस्य का दिया तूने सरल उपचार।

प्रथमोल्लास, कहावे ब्रह्मा विष्णु महेश, एक ही ईश्वर माने,
इन्द्र नारद भगवती पर श्रद्धा से मुख्य नाम 'ओम' ही जाने।

द्वितीयोल्लास, बिनु शिक्षा के जगत अंधियारा छाये,
सर्व शिक्षा, स्त्री-पुरूष पाकर, जीवन उत्तम बनाये।

तृतीयोल्लास, ब्रह्मचर्य महत्ता, सत्य ग्रन्थों का ज्ञान करावे,
पठन पाठन की आर्ष विधि से जीवन को प्रखर बनावें

चतुर्थोल्लास, कर्त्तव्य-गृहस्थाश्रम में विवाह बंधन अपनाये,
परिवार-राष्ट्र पालन हेतु, विश्व बंधु बनजाये।

पंचमोल्लास, के पावन प्रचारार्थ, वानप्रस्थ अपनाये,
अंतिम समय संन्यासी बनकर विश्वकल्याण जगाये।

छठोल्लास, राजधर्म का मुख्य पाठ पढ़ा सुशासन चलवाये,
कर्त्तव्याधिकार पालन कर, राष्ट्र हितार्थ स्वच्छ शाषी कहाये।

सप्तोल्लास, ईश्वर प्रदत्त ज्ञान वेदों में सम्पूर्ण जगत अपनाये,
ऋषिनुवाद ज्ञान गुण सागर, ऋग्वेद यजुर्वेद साम, अथर्ववेद को जाने।

अष्टमोल्लास, जगतोत्पति समय चक्र, युग युग बदला जाय,
पृथ्वी, सौर मंडल अंत समय में प्रलय स्थिति को पाय।

नवमोल्लास, पदार्थ को जानो विद्या से, असत्य मिटाओं ज्ञान से,
संसार का उपकार करना, बंधन मुक्त छुटकारा होगा मोक्ष से।

दशमोल्लास, आचार-आनाचार विचार से शुद्ध करो जीवन को,
अभक्ष्यादि का त्याग करो, तामस क्रोध मिट जाय, मन पवित्र हो।

एकादशोल्लास, मत-मतान्तरो की पृष्ठभूमि में पैदा हुए नव ईश्वर दलाल,
सुख-स्वर्ग का चकमा देकर पाप करावे बेमिसाल।

द्वादशोल्लास चारवाक निर्बुद्धिजनों ने वेदों का किया शर्मसारानुवाद,
रही कसर मिटा जैनबौद्ध धर्म बने अनईश्वरवादी चलाया नास्तिकवाद।

त्रयोदशल्लास, विचित्र है ईसाई मत, विज्ञान विरुद्ध मतान्तर,
क्षमा-राहत प्रदान कराते, पाप बढ़ाते लालच करवाते धर्मान्तरण।

चौदहल्लास, मुस्लिम मत तलवारों का, न कोई सिद्धान्त न ही विद्वान
सपना देखे संसार को पाक करें, परिवार बढ़ा बहुमत जताय कर।

- नरसिंह सोलंकी, आर्य समाज सूरसागर, जोधपुर (राज) - 342024

महर्षि दयानन्द सरस्वती का दार्शनिक चिन्तन

- आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा

महर्षि दयानन्द महान दार्शनिक, विचारक और सत्यान्वेषक थे। वे ऋषिवर देव दयानन्द सरस्वती सूक्ष्मद्रष्टा, तत्त्वान्वेषी, सकल शास्त्र निष्णात, वेद विद्या प्रसारक, अज्ञान निवारक, त्रैतवाद प्रतिष्ठापक, महाज्ञानी, महायोगी और महापुरुष थे।

इस देश मे त्रैतवाद की सिद्धि, त्रैतवाद का प्रामाण्य, त्रैतवाद का प्रतिपादन, त्रैतवाद का प्रसार, त्रैतवाद का महत्त्व, त्रैतवाद का मण्डन, त्रैतवाद का दार्शनिक पक्ष, त्रैतवाद का चिन्तन जिस ऋषि ने प्रस्तुत, प्रामाणित और प्रतिष्ठापित किया।

वेद महर्षि अद्‌भुत प्रतिभा सम्पन्न, विलक्षण विचारों से युक्त, वेदान्ततत्त्वज्ञ, वेदविद्याविज्ञ, दर्शनमर्मज्ञ और वेदादि सत्य-शास्त्रों के महान ज्ञाता थे।

त्रैतवाद में ईश्वर का स्वरुप

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने विरचित सत्यार्थ-प्रकाश के सप्तम समुल्लास में अनेक वेदमन्त्रों से, विविध प्रमाणों से और अपनी बुद्धि द्वारा प्रस्तुत तर्क से ईश्वर के स्वरुप को अच्छी तरह से समालोचित और प्रतिपादित किया है।

(क) एकेश्वरवाद का प्रतिपादन-

महर्षि दयानन्द ने कहा कि ईश्वर एक है, जो सृष्टिकर्ता, सृष्टिभर्ता और सृष्टिसंहर्ता है। **"भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्"** (यजुर्वेद-13/4) संसार का एक ही पति परमात्मा है। **"इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहु रथोंदिव्यः सः सुपर्णो गरुत्मान्। एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्त्यग्निं यम मात-रिश्वानमाहुः"** (ऋग्वेद 1/164/46) एक ही ईश्वर अनेक नामक वाचक है। जैसे-इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, दिव्य, सुपर्ण, गरुत्मान, अग्नि, यम, मातरिश्वा आदि। विद्वान एक ही ईश्वर को अनेक नामों से पुकारते हैं।

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते। न पचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते। नाष्टयो न नवमो दशमो नाप्युच्यते। स एष एव एक वृदेक एव।

(अथर्ववेद-13,4)

वह परमात्मा दो, तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ और दस नहीं, एक ही है। **सः सच्चिदानन्दः सजातीय विजातीय स्वगत भेदशून्यः एकः एव। सर्वाणि एतानि नामानि परस्य ब्रह्मणः** (विष्णुधर्मोत्तर पुराण-3,123,13)

वह सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा सजातीय विजातीय स्वगतभेद से रहित एक ही है। पर ब्रह्म के सभी नाम हैं।

(ख) सत्यार्थ प्रकाश में एकेश्वरवाद की सिद्धि-

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम सम्मुलास में वर्णन किया है कि अनेक नाम वाचक ईश्वर एक है। पुराणों में ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणेश, महादेव, वरुण, इन्द्र और अग्नि आदि अनेक देवों का वर्णन है। इन देवताओं का कैसे अवतार! अवतार का प्रयोजन, अवतार का महत्त्व और अवतार के उद्‌देश्य का वर्णन है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का यह कथन विचारणीय और ग्राहय है। वह परमेश्वर अनन्त गुण कर्म स्वभाव युक्त है। इसलिए वह अनन्त नाम वाचक है। प्रत्येक गुण कर्म स्वभाव का एक एक नाम है। जैसे- 'ब्रह्मा' जो सम्पूर्ण जगत् को रचके बढ़ाता है, इसलिए परमेश्वर का नाम 'ब्रह्मा' है। 'विष्णु'- चर और अचर रूप जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का नाम 'विष्णु' है। 'रूद्र'जो दुष्ट कर्म करने हारों को रूलाता है, इससे उसका नाम 'रूद्र' है। 'इन्द्र'- जो अखिल ऐश्वर्य- युक्त है, इससे परमात्मा का नाम 'इन्द्र' है।

"स ब्रह्मा स विष्णुः स रूद्रस्स शिवस्सोऽक्षरस्स् परमः स्वराट्। स इन्दस्स कालाग्निस्स चन्दमाः। (कैवल्यउपनिषद्)

(ग) निराकार का मण्डन और साकार का खण्डन-

"सः पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रण मस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्"। (यजुर्वेद -40/8) वह परमात्मा सर्वव्यापक, अशरीरी, व्रणादिरहित, नाडीबन्धन मुक्त, शुद्ध, पवित्र और पापमुक्त है। सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में परमेश्वर के निराकार होने की सिद्धि में महर्षि दयानन्द ने मौलिक चिन्तन और अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत किया है।

प्रथम हेतु- ईश्वर निराकार क्यों? यदि ईश्वर साकार हो, तो वह सर्वव्यापक नहीं हो सकता है। **ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वंतस्यो परव्याख्यानं भूतं भवद भविष्यदिति सर्वमोंकार एव। यच्चान्यत्रिकालातीतें तदप्योंकार एव।** (माण्डूक्योपनिषद्) 'ओ३म' एक अविनाशी अक्षर है। यह समस्त संसार 'ओ३म्' की व्याख्या है। अर्थात् यह ब्रह्मण्ड 'ओ३म्' की महिमा से मंडित है। भूत-वर्तमान-भविष्य सब ओ३म् का ही विस्तार है। जो त्रिकालातीत है, यह 'ओ३म्' का ही प्रसार है।

'ओ३म्' में अकार प्रथम मात्रा है। आप्नोति ह वै सर्वान् कामान् आदिः च भवति। (मा0 उ0) वह सब कामानाओं को प्राप्त कर लेता है, वह सबसे प्रथम हो जाता है। 'आप्नोति' का 'अ' ओंकार का 'अकार' है। 'ओ३म्' में 'उकार' द्वितीय मात्रा है। उत्कर्षति ज्ञान-संततिम् समानः च भवति (मा0 उ0) वह भक्त जीवन में उन्नति करता है, ऊपर उठता है, उत्कर्ष को प्राप्त होता है। वह ज्ञान का विस्तार अपने शिष्यों में करता है और सबके प्रति समदर्शी, समान भाव रखने वाला होता है, अर्थात् सबमें आदरणीय हो जाता है। 'उत्कर्षति' का 'उ' ओंकार का 'उकार' है। 'ओ३म्' में 'मकार' तृतीय मात्रा है। मिनोति ह वा. इदं सर्वमपीतिश्च भवति (मा0 उ0) 'ओ३म्' का उपासक समस्त संसार को माप लेता है, उसकी चाह पा जाता है। वह संसार का अन्त (मर्मः रहस्य) समझ लेता है। ऐसे ओंकार के उपासक के लिए जीवन में सांसारिक विषयों, दुःखों और क्लेश आदि की समाप्ति हो जाती है।

'ओ३म्' में 'अ' जाग्रत अवस्था, 'उ' स्वप्न अवस्था और 'म्' सुषुप्ति अवस्था के रूप हैं।

'ओ३म्' की 'अ' मात्रा में जाग्रत अवस्था का स्वरूप-

जब जीवात्मा की चेतना शरीर के अन्दर से बाहर की ओर आती है, तब शरीर की "जाग्रत-अवस्था" होती है और जीवात्मा का "जाग्रत स्थान" है।

जीवात्मा जाग्रत् स्थान में होने पर "बहिःप्रज्ञ" होता है। जीवात्मा के जाग्रत् स्थान में होनें पर सिर, आँख, कान वाणी, फेफड़े, हृदय तथा पांव ये सप्त-अंग है। अंगों का कार्य संसार का भोग करना है। जीवात्मा के पास भोग के 19 साधन, इसके 19 मुख हैं। (5 ज्ञानेन्द्रियाँ, 5 कर्मेन्द्रियाँ, 5 प्राण, 4 अन्तः करण=मन, बुद्धि चित्त, अहंकार) इनसे जीवात्मा संसार का भोग करता है। जाग्रत्-स्थान में बैठा हुआ जीवात्मा एक-एक व्यक्तिरूप में होने से 'वैश्वानर' कहलाता है। जीवात्मा इस शरीर द्वारा संसार का भोग करने से 'स्थूलभुक' कहलाता है। इस प्रकार अवस्थाएं शरीर की होती हैं जो निरन्तर बदलती रहती हैं। जीवात्मा की तो सदा एक ही अवस्था होती है। शरीर की जाग्रतावस्था, जीवात्मा का जाग्रत-स्थान है। अवस्था तथा स्थान में भेद है। जब शरीर जाग्रत-अवस्था में होता है तब जीवात्मा जाग्रत-स्थान में होता है। इस तरह जाग्रत अवस्था और जाग्रत स्थान दोनों ओ३म-के 'अ' रूप की महिमा है।

'ओ३म्' की 'उ' मात्रा में स्वप्न-अवस्था का स्वरूप-

जब शरीर 'स्वप्न-अवस्था' में होता है, तब जीवात्मा 'स्वप्न-स्थान' में होता है। इस समय जीवात्मा 'अन्तः प्रज्ञ' हो जाता है। बाहर के संसार के विषयों से उसका ध्यान हटकर अपने मन के विचारों में चला जाता है। इस स्वप्न-अवस्था में वह 'सप्त अंगों' और '19 मुख' से सूक्ष्म शरीर और सूक्ष्म शरीर की इन्द्रियों से विचारों (संस्कारों) का भोग करता है। इस कारण स्वप्न-स्थान में जीवात्मा का शरीर 'तैजस' कहलाता है। क्यों कि इस समय तेजोमय मन जाग उठता है। इस सूक्ष्म शरीर को तैजस कहते हैं। जब शरीर स्वप्न अवस्था में चला जाता है तब जीवात्मा का यथार्थ-तेजोमय रूप जो शरीर के अन्धकारमय आवरण से ढका हुआ था, चमक उठता है। इसलिए स्वप्न-स्थान में जीवात्मा शरीर द्वारा 'प्रविविक्तभुक्' कहलाता है अर्थात् विवेक (विचारों) के जगत् का भोग करता है। इस तरह शरीर की स्वप्न-अवस्था और जीवात्मा का स्वप्न-स्थान दोनों 'ओ३म्' की 'उ' मात्रा की महिमा है।

'ओ३म्' की 'म्' अक्षर में सुषुप्ति-अवस्था का स्वरूप-जब शरीर 'सुषुप्त-अवस्था' में होता है तब जीवात्मा का 'सुषुप्त- स्थान' है। शरीर पूर्णतः सो जाने पर कोई कामना नहीं रहती है। किसी प्रकार का स्वप्न नहीं रहता है। शरीर की इस सुषुप्ति अवस्था को प्राज्ञ (प्र+अज्ञ) अत्यन्त अज्ञान की अवस्था कहा गया है। सुषुप्तावस्था में शरीर जड़ सा हो जाता है। इस समय जीवात्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जाता है। जीवात्मा शरीर में रहते हुए भी, उसका शरीर से सम्बन्ध टूट जाता है। जीवात्मा अपनी चैतन्य शक्ति को शरीर में बिखेरने के स्थान पर अपने स्वरूप में खींचकर एकीभूत कर लेता है। इस समय जीवात्मा तो 'प्रज्ञानघन' (ज्ञान की घनावस्था) में आ जाता है और शरीर 'प्राज्ञ' (अज्ञान की अवस्था) में आ जाता है। जीवात्मा के सुषुप्त-स्थान में आकर सब संस्कार शांत हो जाते हैं। उस समय जीवात्मा के भोग का साधन अपनी चेतना

- जारी पृष्ठ 6 पर

.....महर्षि दयानन्द ने कहा कि ईश्वर एक है, जो सृष्टिकर्ता, सृष्टिभर्ता और सृष्टिसंहर्ता है। "भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्" (यजुर्वेद-13/14) संसार का एक ही पति परमात्मा है। "इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथोंदिव्यः सः सुपर्णो गरुत्मान्। एक सद्विप्राः बहुधा वदन्त्यग्निं यम मात-रिश्वानमाहुः" (ऋग्वेद-1,164,46) एक ही ईश्वर अनेक नामक वाचक है। जैसे-इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, दिव्य, सुपर्ण, गरुत्मान, अग्नि, यम, मातरिश्वा आदि। विद्वान एक ही ईश्वर को अनेक नामों से पुकारते हैं। न द्वितीयों न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते। न पच्चमो न षष्ठः सप्तमों नाप्युच्यते। नाष्टयो न नवमों दशमों नाप्युच्यते। स एष एव एक वृदेक एव। (अथर्ववेद-13,4)

वह परमात्मा दो, तीन, चार, पांच, छह, सात, आठ, नौ और दस नहीं, एक ही है।

सः सच्चिदानन्दः सजातीय विजातीय स्वगत भेदशून्यः एकः एव। सर्वाणि एतानि नामानि परस्य ब्रह्मणः (विष्णुधर्मोत्तर पुराण-3,123,13)

वह सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा सजातीय विजातीय स्वगतभेद से रहित एक ही है। पर ब्रह्म के सभी नाम हैं।

..... वह परमेश्वर अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव युक्त है। इसलिए वह अनन्त नाम वाचक है। प्रत्येक गुण कर्म स्वभाव का एक एक नाम है। जैसे- 'ब्रह्मा' जो सम्पूर्ण जगत् को रचके बढ़ाता है, इसलिए परमेश्वर का नाम 'ब्रह्मा' है। 'विष्णु'- चर और अचर रूप जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का नाम 'विष्णु' है। 'रूद्र'जो दुष्ट कर्म करने हारों को रूलाता है, इससे उसका नाम 'रूद्र' है। 'इन्द्र'- जो अखिल ऐश्वर्य- युक्त है, इससे परमात्मा का नाम 'इन्द्र' है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार के अन्तर्गत

अहमदाबाद पुस्तक मेले में वेद एवं वैदिक साहित्य प्रचार

नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली, अहमदाबाद नगर निगम एवं गुजराती साहित्य परिषद् के सहयोग से गुजरात यूनिवर्सिटी प्रदर्शनी सैन्टर, अहमदाबाद में दिनांक 1 मई से 7 मई, 2014 में अहमदाबाद राष्ट्रीय पुस्तक मेला का आयोजन किया। पूर्व की भाँति इस बार भी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 'वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार स्टाल' लगाया गया। जिसके माध्यम से सैंकड़ो लोगों तक आर्ष साहित्य का प्रचार-प्रसार हुआ। सत्यार्थ प्रकाश एवं वैदिक साहित्य के प्रति लोगों में विशेषकर युवाओं में रुचि दिखाई दी। सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान एवं गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल जी ने स्टाल पर पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का मनोबल बढ़ाया वहीं वानप्रस्थ आश्रम रोजड़ के स्टाल का भी सहयोग रहा। स्टाल की व्यवस्था मुख्य रूप से श्री रवि प्रकाश आर्य ने सम्भाली। सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने बताया कि पुस्तक मेले साहित्य प्रचार का ऐसा केन्द्र होते हैं जहां हम आर्यसमाज से भिन्न सामान्य जनों तक वेद, वैदिक संस्कृति, आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द का सन्देश पहुंचा सकते हैं। उन्होंने बताया कि सभा देश के प्रत्येक कोने में लगने वाले पुस्तक मेलो में वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए कृतसंकल्प है।

अहमदाबाद पुस्तक मेले में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचे श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी, आचार्य सोमदेव जी, आचार्य ज्ञानेश्वर जी एवं आचार्य डॉ. कमलेश शास्त्री साथ में हैं स्टाल के मुख्य अधिकारी श्री रवि प्रकाश आर्य जी

बाल सेवा आश्रम (अनाथालय) भिवानी में रानी लक्ष्मी बाई भवन का शिलान्यास सम्पन्न

हरियाणा राज्य के भिवानी जिला स्थित बाल सेवा आश्रम अनाथालय द्वारा २ फरवरी को लाला लाजपत राय जयन्ती का आयोजन हर्षोल्लास पूर्वक किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एम डी एच के चेयरमन महाशय धर्मपाल ने की। इस अवसर पर एक भव्य शोभा यात्रा शहर के प्रमुख बजारों से होती हुई निकाली गई। शोभा यात्रा का नेतृत्व कुरुक्षेत्र से पधारे स्वामी संपूर्णानन्द एवं महाशय धर्मपाल एम डी एच ने किया।

इस विशेष अवसर पर बाल सेवा आश्रम (अनाथालय) के कन्या भवन रानी लक्ष्मी बाई खण्ड का शिलान्यास महाशय धर्मपाल जी के कर-कमलों से किय गया।

इस अवसर पर महाशय धर्मपाल जी को भारत स्वाभिमान ट्रस्ट की ओर से स्मृति चिह्न देकर सम्मानित भी किया गया।

महाशय धर्मपाल जी ने अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि लाला लाजपत राय जी ने इस आश्रम की स्थापना करते हुए जो स्वप्न देखा था, यदि मैं उसे पूर्ण करने में जरा-सा भी सहयोग कर सका तो मैं अपने को धन्य समझूंगा। मेरा जीवन आर्यसमाज को समर्पित है और लाला जी ने भी इस जिम्मेदारी को आर्यसमाज को ही सौंपा था।

स्वामी संपूर्णानंद जी ने आश्रम द्वारा किया जा रहे कार्यो की विशेष रूप से सराहना कर साधुवाद दिया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने लाला लाजपत राय द्वारा देश हित में दिए गये बलिदान और उनके कार्यो पर प्रकाश डाला उन्होंने कहा कि लाला जी ने स्वामी

- शेष पृष्ठ 6 पर

पुण्य स्मरण

वेद विदुषी आचार्या डॉ. पुष्पावती जी

आर्य समाज के इतिहास में मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी की संस्थापिका आचार्या डॉ. पुष्पावती का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। आपका जन्म 15 अक्टूबर 1925 को पटियाला के माता श्रीमती कलावती एवं श्री ऋषिराज गुप्ता जी के आर्य परिवार में हुआ। आपके पिता स्टेट बैंक ऑफ पटियाला के ब्रांच मैनेजर थे एवं एक निष्ठावान आर्य समाजी भी। सरकारी सेवा में रहते हुए भी उन्होंने मानसा मण्डी एवं धूरी नगर में आर्य समाजों की स्थापना कर संस्कारों, संस्कृति एवं सभ्यता के उन्नयन के लिए अपना पूरा योगदान दिया। पिता के गुणों का आचार्या डॉ. पुष्पावती के जीवन पर स्वाभाविक प्रभाव पड़ा।

आपकी प्राथमिक शिक्षा ननिहाल अम्बाला में हुई। आपमें इसी आयु में ही ऋषि दयानन्द सा सादा जीवन बिताने की कल्पना का उदय हुआ। फिर हंसराज महिला कालेज लाहौर में भीष्म पितामह आदि महापुरुषों के साथ महर्षि की जीवनी पुनरावृत्त होने पर पुराने संस्कार दृढ़तर हो गए और लाहौर में ही 10 वर्ष की आयु में आपने आजन्म कौमार्य का निश्चय कर लिया।

जब आपने हिन्दी रत्न एवं प्रभाकर की परीक्षाएं दी तो सौभाग्य से आपके अध्यापक क्रान्तिवीर भगतसिंह के साथियों में से एक थे। उन्होंने आपमें संस्कृत निष्ठा एवं देशभक्ति के विचार कूट-कूट कर भर दिए थे। तब आपने निश्चय किया कि पहले संस्कृत पढूँगी फिर अंग्रेजी और तभी आापका आजन्म कौमार्य व्रत निश्चय से संकल्प में बदल गया। घर में विवाह की तैयारी चल रही थी और आपके ब्रह्मचर्य व्रत ने वहां विस्फोट का काम किया। व्रत की रक्षा के लिए माता-पिता को मनाने हेतु आपको एक लम्बा संघर्ष करना पड़ा। एक बार आत्मदाह का विचार भी मन में आया परन्तु तभी सार्वदेशिक सभा के मन्त्री प्रो. सुधाकर जी के उत्साह वर्धक प्रेरणास्पद पत्र से आपका मन परिवर्तित हो गया और सत्याग्रह करने पर माता-पिता ने भी ब्रह्मचर्यव्रत के लिए स्वीकृति प्रदान की।

पिता जी के स्तानान्तरण के कारण आपकी शिक्षा भी विभिन्न स्थानों पर हुई। संस्कृत शिक्षकों की सही व्यवस्था में भी अड़चन आई परन्तु आप अपने निर्णय पर अटल रही। पिता जी के साथ कश्मीर यात्रा का आपको सुअवसर प्राप्त हुआ। प्राकृतिक सुषमा का प्रभाव स्वाभाविक रूप से आप पर हुआ और यहीं आपकी कविता यात्रा का प्रादुर्भाव हुआ:-

" मैं अपने प्रभु की दीवानी हूँ
जग का शासन जिसके हाथों में,
मैं उस राजा की रानी हूँ"
" जब छुटेंगे मुझसे ये वन
मैं पगली सी कहती फिरती
कानन कानन कानन "

1945 से आपने लाहौर से बी. ए. विषयों की तैयारी की परन्तु 1947 में विभाजन एव साम्प्रदायिक दंगो के कारण आपको वापिस भारत आना पड़ा। आर्य समाज के उत्सवों एवं अन्य कार्यक्रमों में आपकी सक्रिय भूमिका रही। धूरी में 1936 में स्त्री आर्य समाज का गठन हुआ और आप मंत्री चुनी गई।

1939 तक मन्त्री रहने के पश्चात् आपका पठाना जाना हुआ। 1940 में आपको यहाँ कन्या पाठशाला का प्रबन्धक बनाया गया। सामाजिक कार्यों के साथ साथ आपने साहित्य सृजन का कार्य भी निरन्तर जारी रखा। "कृणवन्तो विश्वमार्यम्" का स्वप्न मन में सदैव रहा। वीर नारियों के जीवन पर आपने कई स्वरचित नाटकों का मंचन करवाया। धूरी में 1936 में "शक्ति" नामक पत्र में आपका प्रथम लेख "फौजी भर्ती बिल नही चाहिये" प्रकाशित हुआ। यह अंग्रेजी सरकार के बलात् फौजी बिल कें विरोध में था जिसे अन्य पत्रों ने भी प्रकाशित किया। 1936 से 1947 तक अपने अनेक कहानियाँ, लेख, कथोपकथन लिखे जिनमें सैकड़ों तो धनाभाव या कुछ अन्य कारणों से अप्रकाशित ही रहे।

1947 में साम्प्रदायिक दंगो की चपेट में पंजाब प्रान्त रहा। इस समय कृष्ण नगर महिला रिलीफ सोसायटी की स्थापना हुई जिसका संचालन आपने किया। विभाजन काल में आपने अनेक विपदाओं का तत्परता से सामना किया परन्तु कुछ काल पश्चात् आप सख्त रूप से बीमार हुई परन्तु पुण्य कर्मों के प्रताप एवं ईश्वरीय कृपा से आपने स्वास्थ्य में सुधार किया। स्वस्थ होने पर आपको स्वावलम्बन एवं मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल योजना के क्रियान्वयन की चिन्ता बैचेन करने लगी। तभी एटा गुरुकुल से आपको शतकुण्डी यज्ञ का निमन्त्रण मिला और आप वहाँ गयी। वहीं आपकी भेंट.प ब्रह्मदत्त जिज्ञासु से हुई और उन्होने आपको अष्टाध्यायी पढ़ाने की स्वीकृति दी।

विभिन्न गुरुकुलों एवं शहरो में अध्ययन अध्यापन के बाद आप 21 जून 1951 में वाराणसी आई और अष्टाध्यायी महाभाष्य, धातुपाठ व निरुक्त भी पढा। विभिन्न विद्वानों के मार्गदर्शन में आपने दर्शन, वेदार्ष आदि ग्रन्थों का अध्ययन अध्यापन किया। 29 मई 1955 में डा. गंगाप्रसाद के घर पर जीवनदास जी एवं लाला संतराम अरोड़ा के सहयोग से बालिका सदन की स्थापना की। जिसे मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल के रूप में ही विकसित करना था परन्तु विषम परिस्थितियों एव धनाभाव में के कारण इसे एक सत्र चलाने के बाद ही बन्द करना पड़ा। रूढ़की, दिल्ली यमुनानगर में अध्यापन के बाद पुन: वाराणसी वापस आकर पूज्य गोपीनाथ जी के संरक्षण में आपने मातृ मन्दिर का पुन: संचालन किया जो आज भी अवनरत गति से संस्कृति एवं संस्कारों के रक्षार्थ कार्यरत है।

1962 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से डॉ. सूर्यकान्त जी के मार्गदर्शन में "The methods of the interpretation of vedas" विषय पर पी.एच.डी. तथा 1972 में पूज्य गोपीनाथ कविराज के मार्गदर्शन में "वैदिके च तान्त्रिके-च साहित्ये शब्दार्थ सम्बन्ध:" विषय पर सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से विद्यावारिधि की उपाधि ली। जीवन

पर्यन्त आपका स्वतन्त्र अध्ययन चलता रहा। आज आपके कुशल नेतृत्व के कारण मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल विकास के नए आयामों की ओर अग्रसर है। आपने अपना पूरा जीवन समाज को समर्पित किया और 2 मई 2014 की रात्रि में लगभग 90 वर्ष की आयु में आपका देहावसान हो गया।

अगले दिन पूर्ण वैदिक रीति से वाराणसी के ऐतिहासिक राजा हश्चिन्द्र घाट पर आपका अन्तिम संस्कार किया गया। सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी एवं महामन्त्री जी ने स्वयं पहुंचकर संस्कार कराया।

श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न

माताजी की स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 11 मई, 2014 को मातृमन्दिर में सम्पन्न हुई, जहां वाराणसी के अनेक गणमन्य महानुभावों के साथ सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने डॉ. पुष्पावती जी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि माताजी का पूरा जीवन संस्कारमयी उच्च आदर्शों से प्रफुल्लित रहा है। मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने देश-विदेश में अपनी योग्यता का लोहा मनवाया, यह माताजी के त्याग और बलिदान का ही प्रताप है। आओ, हम सब मिलकर आचार्या डॉ. पुष्पावती के पद्चिह्नों पर चलने का प्रयास करें और उनके कार्यों को आगे बढ़ाते हुए वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार को अपने जीवन का उद्देश्य बनाते हुए कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की संकल्पना को साकार करें।

आचार्या डॉ. पुष्पावती जी की स्मृति में मातृ मन्दिर वाराणसी में 11 मई को श्रद्धाजलि सभा आयोजित की गई। इस अवसर पर यज्ञोपरान्त सम्बोधित करते सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी

पृष्ठ 3 का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती का दार्शनिक .....

मात्र रह जाती है। अत: जीवात्मा को 'चेतोमुख' चेतना ही जिसके भोग का साधन है और कोई अंग नहीं है।

सुषुप्त-अवस्था में शरीर शरीर ज्ञानरहित हो जाता है। परन्तु जीवात्मा सुषुप्त स्थान में आकर ज्ञानरूप, आनन्दमय हो जाता है और आनन्द का ही उपभोग करता है। इसलिए जीवात्मा को 'आनन्द-भुक्' कहते हैं। तभी मनुष्य गहरी नींद से उठकर कहता है- बडे आनन्द से सोया। इस समय जीवात्मा का सम्बन्ध शरीर और मन से छूटकर अपने रूप में आ जाता है। यही जीवात्मा का अपने स्वरुप का आनन्द है।

इस प्रकार शरीर की सुषुप्त अवस्था और जीवात्मा का सुषुप्त-स्थान 'ओ३म्' के 'म्' अक्षर (मात्रा) की महिमा है।

ओ३म् इति ब्रह्म, ओम् इति इदं सर्व, ओम् इति एतत् अनुकृति:।

(तैत्तिरीय 3 प0 1,8,1)

तैन्तिरीय उपनिषद् की शिक्षाध्याय-वल्ली के अष्टम अनुवाक में 'ओ३म्' की महिमा का वर्णन इस प्रकार है। 'ओ३म्' ही ब्रह्म है, ओम् ही यह सब कुछ है, यह संसार ओम् की ही अनुकृति (अनुकरण) व्यक्तरूप है। शिष्य 'ओम्' कहकर गुरू को पाठ सुनाता है, ओम् कहकर साम का गान करता है। स्तुति मंत्रों का पाठ ओम् से प्रारंम्भ करके ओम् से ही समाप्त करते हैं। अध्वर्यु यजुर्वेद के मंत्रों का पाठ ओं से प्रारम्भ करता है। ब्रह्मा ओम् कहकर परमात्मा की स्तुति करता है और ओम बोलकर अग्निहोत्र करने की आज्ञा देता है।

ब्राह्मण प्रवचन के समय ओम् का उच्चारण करता है और कहता है कि मैं ब्रह्म को प्राप्त करूँ और वह ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।

ओं खं ब्रह्म *(बृहद. उप. 5-1-1)*

वह परमात्मा सर्वरक्षक, आकाशवत् व्यापक और सबसे बड़ा एवं महान है। ओंकार स्यात् परं ब्रह्म सर्वमन्त्रेषु नामक: (वृद्धहारीत-10-35) ओंकार ही परम ब्रह्म है। जो सभी मंत्रों के प्रारम्भ में बोला जाता है अर्थात् मंत्रों का नायक है।

प्रणवं हि ईश्वरं विद्यात् सर्वस्य स्थितम्। सर्वव्यापिनम् ओंकार मत्वा धीरा न शोचति।।

(शंकराचार्यकृत माण्डू. उप.कारिका)

मनुष्य (प्रणव-ओम्) को सबके हृदय में विराजमान ईश्वर ही जानना चाहिए। उस सर्वव्यापक ओंकार का ध्यान बुद्धिमान शोकादि में नहीं पड़ता है।

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयों वीतरागा:। यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तन्ते पदं सड्ग्रहेण प्रवक्ष्ये।।

(भगवदगीता 8-11)

वेदवेत्ता लोग जिसको अक्षर कहते हैं, वीतराग यति जिसको प्राप्त करते हैं, जिसकी प्राप्ति की इच्छा करते हुए ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, वह पद मैं संक्षेम से तेरे लिए कहूँगा।

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मास् अनुस्मरन्। य: प्रयाति व्यजन् देहं सयाति परमां गतिम्।।

(भगवद्गीता - 8-13)

जो साधक इस एक अक्षर ब्रह्म का मानसिक उच्चारण करता हुआ शरीर को छोड़कर जाता है। वह परम गति को प्राप्त होता है।

ओं तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मण: त्रिविध: स्मृत:। (गीता- 17-23)

ओं तत् और सत् इन तीन प्रकार के नामों से परमात्मा का निर्देश किया गया है।

तस्मात् ओम् इति उदाहृत्य यज्ञदानतप: क्रिया: ।
(गीता - 17-24)

यज्ञ, दान और तपरूप क्रियाएँ 'ओ' पद का उच्चारण करके ही आरम्भ होती हैं।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में 'ओ३म्' की महिमा का उपदेश

'ओ३म्' यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्यों कि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक (ओ३म्) समुदाय हुआ है। इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं। जैसे अकार से विराट, अग्नि, विश्वादि। उकार से हृदय हिरण्यगर्भ, वायु, तैजस आदि। मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्य शास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानु- कूल ये सब नाम परमेश्वर ही के हैं।

'ओ३म्' में अकार की महिमा- अकार से विराट्, अग्नि और विश्व आदि का ग्रहण होता है। **विराट का अर्थ-** यो विविधं नाम चराऽचरं जगद् राजयति प्रकाशयति स विराट्-विविध अर्थात् जो बहुत प्रकार के जगत को प्रकाशित करे, इससे 'विराट' नाम से परमेश्वर का ग्रहण होता है। यहाँ विविध जगत् को प्रकाशित करने का भाव अव्यक्त-अवस्था से व्यक्त करना है। 'विशेषेण राजतेइति विराट्' विशेषरूप से प्रकाशित होने से भगवान को विराट् कहते हैं। परमात्मा पर प्रकाश्य न होकर स्वयं प्रकाशित है। 'ब्रह्माण्डस्य अन्त: बहि: व्याप्नोति स विराट्' अर्थात् जो ब्रह्माण्ड के भीतर-बाहर व्याप्त है, वह 'विराट' है।

अग्नि का अर्थ- 'य: अञ्चति, अञ्यते, अगति अड्.गति एति वा स: अभय अग्नि: जो ज्ञानस्वरूप, सर्वज्ञ, जानने, प्राप्त होने और पूजा करने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम 'अग्नि' है। 'न गच्छति स्वत: न प्रवर्तत इति अग:, विश्वम् अंग नयति इति अग्नि: अर्थात् इस जड़ जगत् का संचालन करने से भगवान् का नाम 'अग्नि' है। (श्रुति सिद्धान्तसंग्रह) यह सृष्टि का संचालन दो प्रकार से है। एक सर्गादिकाल (सृष्टि निर्माण) के समय में प्रकृति में क्षोभ उत्पन्न करके जगत् की रचना के रुप से और दूसरा निर्मित जगत् के नियन्त्रण रूप से।

अग्नि : एव ब्रह्म (शतपथ ब्राह्मण) अग्नि ही ब्रह्म है। विश्व का अर्थ- विशन्ति प्रविष्टानि भवन्ति सर्वाणि आकाशादीनि भूतानि यस्मिन् य आकाशादिषु सर्वेषु भूतेषु प्रविष्ट: स विश्व ईश्वर:' जिसमें आकाशादि सब भूत प्रवेश कर रहे हैं अथवा जो इनमें व्याप्त होके प्रविष्ट हो रहा है। इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'विश्व' है। विशति सर्वत्र स: विश्व (उणादिसूत्र) जो सर्वत्र व्याप्त है, वह 'विश्व' है। 'संहर्तविशन्ति सर्वाणि भूतानि अस्मिन् इति विश्वं ब्रह्म' प्रलयकाल में सम्पूर्ण जगत् उसमें लीन होता है, इसलिए परमात्मा को 'विश्व' कहते है।

'ओ३म्' में 'उकार' की महिमा-

'उकार' से हिरण्यगर्भ, वायु, तैजस आदि का ग्रहण होता है।

हिरण्यगर्भ का अर्थ- हिरण्यानि सूर्यादीनि तेजांसि गर्भे यस्य स: 'हिरण्यगर्भ:' जिसमें सूर्यादि तेज वाले लोक उत्पन्न होकर जिसके आधार रहते हैं। हिरण्यानां सूर्यादीनां तेजसांगर्भ: हिरण्यगर्भ:- जो सूर्यादि तेज: स्वरूप पदार्थो का गर्भनाम उत्पत्ति और निवास स्थान है, इससे उस परमेश्वर का नाम हिरण्यगर्भ है। हितं रमणीयं अति उज्ज्वलं ज्ञान गर्भे अन्त: सारो यस्य स: अर्थात् रमणीय तथा उज्ज्वल ज्ञान जिसमें विद्यमान है, वह भगवान् हिरण्यगर्भ है। 'प्रजापति: वै हिरण्यगर्भ:' (शत0 ब्रा0)।

वायु का अर्थ- 'वेति व्याप्नोति प्रजनयति वा सर्वजगत् स वायु:' सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त होने से तथा सम्पूर्ण जगत् को उत्पन्न करने से भगवान् को 'वायु' कहते हैं। **स धाता स विधर्त्ता स वायु:** (अथर्ववेद-13-4-3) **'तदेव अग्नि: तत् आदित्य: तत्: वायु:'** (यजुर्वेद-32-1) इन मंत्रों में 'वायु' अर्थ ईश्वर के लिए प्रयोग हुआ है।

तैजस का अर्थ- जो आप स्वयं प्रकाश और सूर्यादि तेजस्वी लोकों का प्रकाश करने वाला है, इससे उस ईश्वर का नाम 'तैजस' है। तेजसि=नश्यति तनू करोति वा अज्ञानं पापं वेति तेज: स्वार्थे अण-"तेजस:" इस प्रकार यह शब्द परमात्मा का वाचक सिद्ध होता है।

- शेष अगले अंक में

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु
अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयो को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।

पृष्ठ 4 का शेष

दयानंद के जीवन को देखकर अपने देश को प्रकाशित किया है उनका एक-एक काम देश के विकास की नींव बना है उनका पूरा जीवन उच्च आदर्शो से परिपूर्ण था हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर जीवन पथ पर आगे बढना चाहिए।

एम.डी.एच. परिवार के श्री प्रेम अरोड़ा ने भी सम्बोधित किया। बाल सेवा आश्रम अनाथालय (भिवानी) के प्रधान विद्यासागर गिरधर ने पधारे सभी महानुभावों का हृदय से आभार व्यक्त किया इस कार्यक्रम में आश्रम के मंत्री नरेन्द्र प्रभाकर, उमेद सिंह शर्मा, वेद प्रकाश आर्य सहित सैंकड़ों की संख्या में आम जन उपस्थित थे।

प्यासे पक्षियों के लिए पानी के परिण्डे बांधना भी यज्ञ

प्यासे पक्षियों के लिए गर्मियों में मिट्टी के परिण्डे बांधना व उनमें पानी व दाने नियमित रूप से डालना भी एक प्रकार का यज्ञ है। ये विचार आज आर्य समाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक ब्यावर से पधारे अमरसिंह जी ने आर्य समाज खेड़ा रसूलपुर में आयोजित कार्यक्रम में परिन्डे वितरित करते हुए व्यक्त किए।

इस अवसर पर जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने यज्ञोपरान्त यजमानों को परिन्डे वितरित करते हुए कहा कि आर्य समाज प्राणीमात्र के कल्याण की कामना करता है तथा इसी परोपकार की भावना से हर वर्ष कोटा में गर्मियों में मिट्टी के परिन्डे आर्य समाज द्वारा बांटे व बांधे जाते हैं व अन्य सेवा के कार्य भी किए जाते हैं।

इस अवसर पर हाड़ौती के आर्य विद्वान विरधीचंद शास्त्री, आर्य संत मोडूलाल, जिला सभा के जे.एस. दुबे, डॉ. के.एल. दिवाकर, आर्य समाज खेड़ा रसूलपुर के प्रधान ओमप्रकाश आर्य, बंशीलाल आर्य, रामनारायण आदि स्त्री पुरुष उपस्थित थे।

- रामप्रसाद याज्ञिक

गुरुकुल आर्यनगर हिसार के संस्थापक स्वामी देवानन्द सरस्वती की
29वीं पुण्यतिथि एवं श्रद्धान्जली सभा
दिनांक 20 मई 2014
प्रात: 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक
मुख्य वक्ता- स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, पिपराली, राजस्थान
आप सब सादर आमन्त्रित हैं।
- प्राचार्य मानसिंह पाठक (9466403222)

पं. कमलेश और आचार्य डॉ. सुकामा पुरस्कृत

भुवनेश्वर आर्यसमाज के 37वें वार्षिक उत्सव के मौके पर पं कमलेश अग्निहोत्री (अहमदाबाद) और आचार्य डॉ. सुकामा (चोटीपुरा आर्य कन्या महाविद्यालय) को यथाक्रम 'महर्षि दयानन्द पुरस्कार-2014' तथा 'शन्नोदेवी राष्ट्रीय वेद विदुषी पुरस्कार 2014' द्वारा सम्मानित किया गया। डॉ. प्रियव्रत दास की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह में उत्कल सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी व्रतानन्द, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, माता शन्नोदेवी तथा भुवनेश्वर के अनेक साहित्यिक, विद्वान, सामाजिक कार्यकर्त्ता और राजनेता उपस्थित थे। **- मन्त्री**

ध्यान योग प्रशिक्षण शिविर

आर्यसमाज अशोक विहार-1 दिल्ली में 4 जून से 8 जून, 2014 तक ध्यान योग साधना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में 14 वर्ष से अधिक आयु के सभी पुरुष एवं महिलाएं भाग ले सकते हैं। भोजन एवं आवास की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से होगी रात्रि निवास अनिवार्य होगा। शिविर शुल्क 500/- रु. है। स्थान सीमित हैं। पंजीकरण के लिए पंजाब नेशनल बैंक, अशोक विहार, दिल्ली खाता सं. 3061000100082810 में राशि जमा कराकर मो. 9718965775 पर सूचित करें।

- जीवनलाल आर्य, मन्त्री

प्रवेश सूचना

आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, अलवर (राज.)

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया, अलवर (राजस्थान) दिल्ली से 100 किमी एवं जयपुर से 150 किमी दूरी पर साबी नदी के किनारे स्थित शान्त सुरम्य एवं एकान्त स्थान में विस्तृत भू-भाग एवं आधुनिक सुविधाओं से युक्त विशाल भवन में कक्षा 6 से 9 , 11वीं एवं शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रवेश आरम्भ हैं। गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त है। पौष्टिक भोजन, कम्प्यूटर शिक्षा, तरणताल एवं योग्य अनुभवी आचार्यगणों से युक्त। प्रवेश हेतु सम्पर्क करें-

- आचार्या प्रेमलता, फोन नं. 01495-270503 मो. 09416747308

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय करतारपुर

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय करतारपुर, जालन्धर (पंजाब) में सत्र 2014-15 के लिए प्रवेश तिथि 20 जून, 2014 निश्चित की गई है। प्रवेश केवल छठी कक्षा में ही दिया जाएगा। प्रवेश परीक्षा प्रात: 10 से 1 बजे तक होगी। प्रवेश परीक्षा में भाग लेने के इच्छुक ब्रह्मचारी प्रात: 9 बजे तक अवश्य पहुंच जाएं। अधिक जानकारी के लिए मो. नं. 9888764311, 9041289397 पर सम्पर्क करें -

- भूषण लाल शर्मा, प्राचार्य

आर्य गुरुकुल एरवा कटरा, औरैया (उ.प्र.)

आर्य गुरुकुल एरवा कटरा (औरैया) उ.प्र. नवीन सत्र 2014-15 हेतु ब्रह्मचारियों के प्रवेश आरम्भ हैं। सात वर्षीय पाठ्यक्रम, उ. प्र. शासन द्वारा मान्यता प्राप्त, परीक्षाएं सर्वत्र मान्य, वेद, दर्शन, संस्कृत व्याकरण, साहित्य, हिन्दी, गणित, कम्प्यूटर, अंग्रेजी, धनुर्वेद सहित सभी विषयों के पाठन की व्यवस्था, अनुशासन, स्वास्थ्य संरक्षण एवं चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान देकर सुन्दर स्वच्छ पर्यावरण, स्थान सीमित हैं शीघ्रता करें-

आचार्य राजदेव शास्त्री, प्रधानाचार्य (09411239744

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

महाराणा प्रताप की जयन्ती पर यज्ञ

महान देशभक्त मेवाड़ के वीर सपूत महाराणा प्रताप की जयंती 9 मई को आर्य समाज संत नगर में आज राष्ट्र-धर्म रक्षा यज्ञ के साथ मनाई गई। इस अवसर पर बोलते हुए आर्य समाज संत नगर के कार्यकारी प्रधान श्री विनोद बंसल ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मेवाड़ की धरती को मुगलों के आतंक से बचाने के लिए महाराणा प्रताप ने अपनी जिंदगी तक दांव पर लगा दी।

जंगल में घूमते हुए महाराणा प्रताप ने असंख्य दु:ख झेले किन्तु देश व धर्म की रक्षार्थ उन्होंने उफ् तक नहीं की। दक्षिणी दिल्ली के ईस्ट आफ कैलाश स्थित संतनगर आर्यसमाज मन्दिर में आज प्रात:काल आयोजित इस विशेष यज्ञ के उपरान्त बोलते हुए वैदिक विदुषी श्रीमती विमलेश आर्या ने कहा कि यदि महाराणा प्रताप जैसे धर्म धुरंधर देश भक्त नहीं होते तो शायद हम इस प्रकार यज्ञ करने की स्थिति में आज नहीं होते और सम्पूर्ण भारत को अकबर जैसे मुगल सम्राट अपने आधिपत्य में लेकर मुस्लिम धर्म में परिवर्तित कर चुके होते। इस अवसर पर आर्य समाज मंदिर के कोषाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र सूद, सह कोषाध्यक्ष श्री विनोद कौशिक, संरक्षक श्री रामकृष्ण, श्री जसवंत राय, श्री संजय सिकरिया, समाज सेवी श्री अरुण होरा, सामाजिक संस्था केयर प्रोमिज वेलफेयर सोसाइटी के महामंत्री श्री राजेश कुमार के अलावा श्रीमती राज कुमारी, श्रीमती कल्पना शर्मा, श्रीमती चन्द्र ज्योति श्रीमती हितेश व कुसुम सहित अनेक लोगों ने यज्ञ में आहुतियां देकर राष्ट्र रक्षा का संकल्प लिया। - ***मन्त्री***

आर्यसमाज हापुड़ का वार्षिकोत्सव एवं वेद कथा

आर्यसमाज हापुड़ का वार्षिकोत्सव एवं वेद कथा 21 से 23 मार्च को ग्राम खड़खड़ी त्यागी की चौपाल में सम्पन्न हुआ। एक उत्साही महानुभाव बृजभूषण त्यागी जी अपने मित्र रवींद्र त्यागी व सुभाष, संजीव, सोनाथसिंह व ग्रामवासियों के सहयोग से वेद प्रचार का यह प्रथम प्रयोग किया जो पूर्णरुपेण सफल रहा। इस अवसर पर श्री संदीप वैदिक (मुजफ्फर नगर) के मधुर भजन एवं आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी के उपदेश हुए। हापुड़ आर्यसमाज के सभी अधिकारियों एवं महिला समाज के अधिकारियों का पूर्ण सहयोग रहा। मंच संचालन राधारमण आर्य जी ने किया। आसपास के समस्त ग्रामीण अंचलों से पधारे आर्यजनो ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।- ***मंत्री***

चुनाव समाचार

सार्व.आर्य वीर दल पू. उ. प्रदेश आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी

संचालक	:	डॉ. विवेक आर्य
मन्त्री	:	श्री प्रमोद कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष	:	श्री आनन्द अर्य

आर्यसमाज सिविल लाइन रामघाट रोड, अलीगढ़(उ.प्र.)

प्रधान	:	श्री रामदीन आर्य पुरुषार्थी
मन्त्री	:	डॉ. पपेन्द्र आर्य
कोषाध्यक्ष	:	श्री मोहन कुमार आर्य

शोक समाचार

श्रीमती सुनीता आर्या को मातृशोक

सार्वदशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के पूर्व अधिकारी अन्य अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी के रूप में सेवा देने वाले स्व. कैप्टन देव रत्न आर्य जी की सासूमाँ एवं श्रीमती सुनीता आर्या जी की माता श्रीमती सरला शर्मा जी का दिनांक 25 अप्रैल, 2014 को अकस्मात निधन हो गया। वे लगभग 86 वर्ष की थीं। माताजी कुछ समय से अस्वस्थ चल रहीं थी। वे अपने पीछे दो सुपुत्र एवं दो सुपुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

श्री अनिल आर्य को भ्रातृशोक

आर्य केन्द्रीय युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल आर्य जी के अनुज एवं आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता व समाजसेवी श्री ठाकुरदास सपरा जी के सुपुत्र श्री सत्यप्रकाश सपरा जी का दिनांक 5 मई, 2014 को मिश्र में निधन हो गया। उनका शव हवाई जहाज से दिल्ली लाया गया तथा शनिवार 10 मई, 2014 को पूर्ण वैदिक रीति से साथ अन्तिम संस्कार किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी ने भी पहुंचकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। शान्ति यज्ञ रविवार 11 मई को सम्पन्न हुआ। जिसमें सभा अधिकारियों सहित अनेक आर्यसमाज के पदाधिकारियों ने पहुंचर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 12 मई, 2014 से रविवार 18 मई, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 15/16 मई, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 14 मई, 2014

विश्वव्यापी आर्य समाज के समाचार

आर्य समाज की आधिकारिक वेबसाइट पर

www.thearyasamaj.org

अपनी संस्था की सूचनाएँ भी अपलोड कर सकते हैं

UPLOAD

अथवा ईमेल से भेजें : thearyasamaj@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल जी जन्मोत्सव पर परिचर्चा

15 जून, 2014 सायं 6 से 7 :30 बजे

आर्यसमाज रोहिणी, सै. -7, दिल्ली-85

वक्ता : डॉ. विवेक आर्य

विषय : बिस्मिल और आस्तिकतावाद

अमर हुतात्मा को श्रद्धांजलि देने अवश्य पहुंचें - मन्त्री

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

स्वाध्याय प्रेमियों के लिए

365 वेद मन्त्रों का अभूतपूर्व संग्रह : प्रतिदिन एक मन्त्र का हृदय से पाठ करें

वैदिक विनय

20% छूट के साथ मात्र 125/- रुपये में

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि–

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां!

तो जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उसकी ईमेल आईडी लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा।

- सम्पादक

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह